

रोहतक के मलंग ने हिला दिया पलंग-2

“दिल्ली मेट्रो में मिले लड़के के तने हुए लिंग को याद करते हुए मैं उसे अपनी योनि में लेने के लिए तड़प रही थी. तभी उसका फोन आ गया. मैंने उसे अपने घर का पता देकर बुला लिया. फिर क्या हुआ ? ...”

Story By: हिमांशु बजाज (himanshubajaj)

Posted: Sunday, August 12th, 2018

Categories: [कोई मिल गया](#)

Online version: [रोहतक के मलंग ने हिला दिया पलंग-2](#)

रोहतक के मलंग ने हिला दिया पलंग-2

मेरी सेक्स कहानी के पिछले भाग

रोहतक के मलंग ने हिला दिया पलंग-1

मैं अभी तक आपने पढ़ा कि मैट्रो में मिले लड़के के तने हुए लिंग को याद करते हुए मैं उसे अपनी योनि में लेने के लिए तड़पती हुई चूत को सहला रही थी कि मेरे पति ने मेरे दूधों को दबाना शुरू कर दिया। मैं तो पहले से ही गर्म थी तो पति को अपने ऊपर चढ़ा लिया और सम्भोग का आनंद लेने लगी लेकिन 4-5 मिनट में उनका जोश मेरी योनि में ठंडा हो गया और गरम चूत प्यासी रह गई। मैं करवट बदलकर सो गई।

अगले दिन मनोज के ऑफिस जाने के बाद मैंने सविता को फोन किया और उससे मैट्रो में मिले लड़के दिनेश वाली बात शेयर करने की सोची।

फिर कुछ सोचकर बताते-बताते रह गई, मैं इधर-उधर की बातें करने लगी। कामवाली भी सफाई करके चली गई।

घंटे भर सविता के साथ गप-शप मारने के बाद मैंने टीवी ऑन किया और पिछली रात वाले सीरियल जो मैंने मिस कर दिए थे वो देखने लगी। 2.30 बजे के करीब बेड पर साथ में पड़े फोन की रिंग बजने लगी।

मैंने फोन उठाकर देखा तो उसी लड़के का फोन था। मैंने फटाक से उठकर बेडरूम का दरवाज़ा बंद कर लिया और फोन पिक करते हुए हेलो किया।

उधर से आवाज़ आई- अभी तो बात कर सको हो मैडम ?

मैंने हँसते हुए कहा- कई दिन लगा दिए तुमने फोन करने में। मैं तो सोच रही थी कि तुम उसी दिन फोन करोगे।

उसने कहा- उस दिन तो मुझे रोहतक अपने गाँव जाना था इसलिए घर से फोन पर बात

नहीं कर पाया। मेरी लुगाई को पता लग जाता तो जी का क्लेश कर देती।
उसके मुँह से ऐसी बोली सुनकर मुझे और हंसी आ रही थी।

मैंने कहा- तो तुम भी मैरीड हो क्या...

उसने कहा- हां, मेरे तो दो बालक भी हैं, तीन साल की लड़की है और एक साल का लड़का।

मैंने कहा- मुझे तो तुम देखने में कुंवारे लग रहे थे।

सुनकर वो हंस पड़ा और बोला- ना जी मैडम, अब तक कुंवारा कित छोड़ने वाले थे मां-
बाप..मेरा तो 21वें साल मैं ब्याह हो लिया था।

मैंने कहा- तो बीवी से मन भर गया क्या ?

उसने कहा- लुगाई अपनी जगह है, आप अपनी जगह। कभी कभी बाहर भी इंजॉय कर
लिया करूं मैं तो।

मैंने कहा- तो फिर कब मिल रहे हो ?

वो बोला- अभी मैं दिल्ली ही आया हुआ हूं रूम पर... आप बताओ कब सेवा देनी है ?

मैंने कहा- अभी आ सकते हो ?

उसने कहा- हां, बिल्कुल जी।

मैंने कहा- ठीक है, तो अभी आ जाओ क्योंकि शाम को मेरे पति घर लौट आते हैं।

उसने कहा- कहां आना है..न्यू बता दो आप एक बार।

मैंने कहा- घर का एड्रेस मैसेज कर रही हूं... लेकिन जल्दी आना।

उसने कहा- चिंता मत करो मैडम, बस इब आया।

मैंने कहा- ठीक है, मैं फोन रखती हूं।

कहकर मैंने फोन बंद किया, अपने घर का पता उसे मैसेज किया और जल्दी से तौलिया
उठाकर बाथरूम की तरफ नहाने चली।

बाथरूम में नहाते हुए मैंने अपने गीले नंगे बदन को गौर से देखा। मेरे दूधों में खुद ब खुद

तनाव आ रहा था। मैंने उनको सहलाते हुए साबुन लगाया और शॉवर के नीचे खड़ी हो गई। पानी ठंडा था लेकिन जिस्म से जैसे भांप निकल रही थीं। मैं दूधों को शॉवर के नीचे ही दबाने, सहलाने लगी। मेरे तने हुए दूधों से होकर पानी पेट से फिसलता हुआ योनि को भिगोकर नीचे फर्श पर गिर रहा था। मैं चूत को छूना नहीं चाहती थी क्योंकि एक बार चस्का उठ गया तो फिर रुका नहीं जाएगा।

मैंने हल्के से अपनी योनि को टांगें फैलाकर पानी से साफ कर लिया और शॉवर बंद करके बदन पौँछते हुए बाहर आ गई। मेरे दूध मेरे कदमों के साथ उछलते हिलते हुए ऊपर नीचे डोल रहे थे। मैंने अलमारी से पिक ब्रा और पैंटी निकालकर अपने दूधों और जांघों में फंसाकर पहन ली, ऊपर से नाइट में पहनने वाली सफेद लोअर और टॉप डाल लिया।

मैंने बाल खुले ही रखे और हल्का सा परफ्यूम भी लगा लिया।

तरोताज़ा तन-बदन के साथ मैं बेड पर टीवी के सामने बैठ गई और उसके आने का वेट करने लगी। आंखों के सामने टीवी चल रहा था लेकिन दिमाग में दिनेश की ब्लैक जींस में तने लिंग की छवि!

मैं बार-बार घड़ी की तरफ देख रही थी, 20 मिनट हो गए बैठे हुए। फोन उठाकर देखा तो उससे बात किए हुए 40 मिनट बीत गए थे।

इंतज़ार करना भारी हो रहा था।

अचानक से डोरबेल बजी, मैंने नीचे झांका तो वो काले रंग का हेलमेट पहने गेट के बाहर खड़ा था। मैंने ऊपर से ही ऑटोमेटेड सिस्टम से मेन गेट अनलॉक कर दिया।

वो अंदर दाखिल हुआ और मेन गेट बंद होते ही मैंने फिर से उसे लॉक कर दिया।

वो सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर वाले फ्लोर पर आ गया जिसका दरवाज़ा मैंने पहले ही खुला रखा था। मैंने बाहर जाकर उसको अंदर आने का इशारा किया।

उसने अंदर आकर हेल्मेट उतार दिया। वो पसीना-पसीना हो गया था।

मैंने उसे बैठने के लिए कहा और किचन से पानी लेकर आई और पीने के लिए दिया। वो मेरे टॉप पर नज़रें गड़ाए मेरे हिलते हुए दूधों को ताड़ रहा था।

उसने हल्के नीले रंग की फेडड जींस और सफेद शर्ट डाल रखी थी। देखने में किसी जेंटलमेन जैसा दिख रहा था।

लेकिन जब उसने मुंह खोला तो मेरी हंसी छूट गई।

“आज तो घनी गर्मी हो री है मैडम”

मैंने हंसी कंट्रोल करते हुए कहा- कोई बात नहीं, तुम पसीना सूखने के बाद शॉवर ले लो।

उसने कहा- के ले लूँ ?

मैंने कहा- पसीना सुखाकर नहा लो।

वो बोला- मैडम, थोड़ा हिंदी में भी बोल लिया करो। इतनी अंग्रेजी काटनी ना आती।

मैंने मन ही मन कहा ‘भले ही दिल्ली में रहता है लेकिन लक्षण वही गाँव वाले हैं।’

मैंने कहा- ठीक है, तुम जाकर नहा लो। तब तक मैं तुम्हारे लिए चाय बनाती हूँ।

उसने मेरी बात पूरी होने से पहले ही काटते हुए कहा- चा..चू कोनी पिंदे हम..

मैंने पूछा- क्या ?

वो बोला- ठंडा दे दो या फिर सादा पानी ए प्या दो।

मैंने कहा- ठीक है, तुम नहा तो लो तब तक ?

उसने पूछा- गुसलखाना कित है.. ?

मैंने कहा- वो सामने ही है। अंदर ही टॉवल होगा।

वो उठकर बाथरूम में नहाने चला गया और मैं किचन में उसके लिए कोल्ड ड्रिंक लेने।

मैंने ट्रे में कोल्ड ड्रिंक और कुछ नमकीन रख दी और उसके बाहर आने का इंतज़ार करने लगी।

बाथरूम का दरवाज़ा खुला और वो कंधे पर टॉवल टांगे हुए बाहर निकला। उसके एक हाथ में उसके कपड़े थे और दूसरे हाथ से गीले बालों को झटकाते हुए मेरी तरफ बढ़ने लगा। उसने जॉकी का ड्राअर वाला ट्रंक पहन रखा था जो उसकी मोटी-मोटी जांघों पर फंसा हुआ था और उसका लिंग ड्राअर के ठीक पीछे अंदर ही अंदर अच्छा खासा उभरा हुआ धीरे-धीरे अपनी श्रेय में आ रहा था। उसकी छाती पहलवानों की तरह चौड़ी और उठी हुई थी लेकिन बदन बिल्कुल चिकना था। कमर से भी चौड़ा था और अंडरवियर के नीचे गोरी जांघों पर भीगे हुए हल्के बाल उसकी स्किन से चिपके हुए थे।

उसने कपड़े साथ में डले सोफे पर एक तरफ फेंके और वहीं सोफे पर जांघें फैलाकर बैठ गया। मैं उसके जिस्म को ध्यान से देख रही थी और वो मुझे। उसका लिंग तनाव में आना शुरू हो गया था। मैंने बेड पर रखी प्लेट उठाकर उसकी तरफ बढ़ा दी और उसने कोल्ड ड्रिंक का ग्लास उठाकर होठों से लगा लिया।

जल्दी ही ग्लास खाली करके उसने वापस ट्रे में रखा और उठकर मेरे पास बेड पर आकर बैठ गया।

उसने मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए कहा- और मैडम... सुना दो के हाल है ?
कहते हुए उसने मेरे कंधे को हल्के से मसाज करना शुरू कर दिया।

मैंने टीवी रिमोट से बंद कर दिया और हम दोनों बेड पर सिरहाने की तरफ दीवार के साथ कमर लगाकर बैठ गए। मैंने उसकी नंगी जांघों पर हाथ फिराया ही थी कि उसने मेरा मुंह अपनी तरफ घुमाकर मेरे होठों को चूसना शुरू कर दिया। हम दोनों एक दूसरे को बांहों में भरते हुए डीप किस करने लगे।

जल्दी ही उसका हाथ मेरे दूधों पर आ गया और उनको टॉप के ऊपर से ही दबाने लगा। मैंने टॉप निकाल दिया तो पिक ब्रा में अंदर फंसे दूधों को देखकर वो उन पर टूट पड़ा। मुझे नीचे बेड पर गिराकर अपने मजबूत हाथों से मेरे दूधों को ब्रा के ऊपर से ही दबाने लगा।

मैंने उसको अपने ऊपर खींचा और फिर से उसके होठों को चूसने लगी और मेरा हाथ नीचे ही नीचे उसके बदन को टटोलता हुआ अंडरवियर पर पहुंचकर उसके लिंग को सहलाने लगा. लिंग को छूते ही कामाग्नि भड़क उठी। काफी मोटा लिंग था उसका। मेरे पति से तो दोगुना था आकार में। उसने मेरी ब्रा को खींचकर दूधों को ऊपर निकाल लिया और अपने गर्म होंठ मेरे दूधों पर रख दिए। आह्ह्ह... मेरी सिसकी निकल गई।

मैं उसकी कमर को सहलाने लगी और वो मेरे दूधों के बीच में तने निप्पलों को दातों से काटने लगा। उई माँ... ऊह्ह्ह... दिनेश... आह्ह्ह... मैं उसकी पीठ पर सहलाती हुई उसकी काम क्रीड़ा में डूबने लगी।

काफी देर तक दूधों से खेलने के बाद वो नीचे की तरफ की पहुंचने लगा और मेरी सफेद पजामी को खींचकर मुझे नंगी कर दिया। पिंग पैटी को भी उतरवाकर उसने चूत को अपनी मर्दाना हथेली से सहला दिया और दूसरे हाथ से ऊपर की तरफ दूधों को दबा दिया। मैं मचल गई, मैंने उठकर उसको नीचे गिरा लिया और फिर से उसके होठों को चूस डाला। मैंने उसकी गर्दन पर किस किया। फिर चेस्ट पर उसके निप्पलों को जीभ से छेड़ने लगी। इस बीच उसके मजबूत हाथ मेरे दूधों को दबाए जा रहे थे।

उसकी पकड़ इतनी मजबूत थी कि दूधों में दर्द होने लगा था लेकिन मज्जा भी उतना ही आ रहा था।

मैं नीचे की तरफ बढ़ी और उसके अंडरवियर में तने उसके लिंग को पल भर देखने के बाद अंडरवियर की इलास्टिक को हाथ से खींचते हुए उसको नंगा करवा दिया। उसका लिंग 7 इंच से कम का नहीं था और मोटा भी काफी था। मैंने उसके लिंग को मुंह में भर कर चूस लिया तो उसकी सिसकारी निकल गई... वो बोला-मारोगे के मैडम..आह्ह्ह...

मैंने लिंग को मुंह से निकाला और हाथ में लेकर उसको फील करने लगी। एक दो बार हाथ में लेकर हिलाया तो वो तड़प उठा और उठकर मुझे नीचे गिराते हुए मेरी जांघों चौड़ी फैलाकर मेरी पानी छोड़ रही चूत को चाटने लगा।

आह्ह्हह... मैं तड़प उठी... उसके बालों को नोचने लगी.

उसने पूरी जीभ मेरी चूत के अंदर डाल दी और अंदर बाहर करने लगा। मैंने पीछे से बेड का सिरहाना पकड़ लिया और चूत को उठाते हुए उसके मुंह में धकेलने लगी।

उसने चूत में मुंह मारते हुए मेरे दूधों को फिर से पकड़ लिया और निप्पलों को चुटकी से काटने लगा।

‘उम्मह... अहह... हय... याह... आह्हह... दिनेश... मैं मर जाऊंगी...’ करते हुए मैंने ज़ोर ज़ोर से उसके मुंह में चूत को फेंकना चालू कर दिया।

उसकी पकड़ से दूधों में इतना तनाव आ गया कि सच में ही मेरा दूध निकलने वाला था। मैंने बेड के सिरहाने को छोड़ा और उसके सिर को पकड़कर चूत में घुसा दिया और टांगों को उसके सिर पर लपेटते ही मेरी चूत ने पानी छोड़ दिया.

मैं झड़ गई थी।

लेकिन वो मलंग कहां रुकने वाला था, उसने मुझे उठाकर बेड पर घोड़ी बनाकर पटका और खुद नीचे कार्पेट पर खड़ा होकर पीछे से मेरी योनि में अपना मोटा लिंग पेल दिया। मैं उचक कर छुड़ाने की कोशिश करने लगी लेकिन उसने दोनों हाथों से मेरे कंधों पर पकड़ बना ली थी और मुझे अपनी तरफ धकेलते हुए मेरी चूत में लिंग को अंदर-बाहर करने लगा।

कुछ देर तो मैं दर्द में ही उसकी पकड़ के अंदर चुदती रही लेकिन धीरे-धीरे मुझे फिर से मज़ा आना शुरू हो गया।

उसे चुदाई करते हुए 5-7 मिनट पहले ही हो चुके थे, मैं भी उसकी चुदाई का आनंद लेने

लगी। लिंग चूत में गचागच अंदर बाहर हो रहा था और उसके मुंह से आहूह... आहूह की आवाजें निकल रही थी। वो बीच बीच में मेरे नितम्बों पर तमाचा भी मार देता और फिर से चोदने लगता।

चुदाई 10 मिनट तक ऐसे ही चली और फिर उसने नीचे से मेरे दूधों को अपने दोनों हाथों में भर लिया मेरी कमर पर पूरा झुककर मेरी पीठ को अपनी भारी भरकम छाती से दबाते हुए तेज़ तेज़ धक्के लगाने लगा।

उसके धक्के इतने तेज़ हो गए कि पलंग भी हिलते हुए चू-चू की आवाजें करने लगा।

उसका लिंग मेरी चूत को फाड़ने लगा और साथ ही वो मेरे दूधों को भी मसले जा रहा था। चूत और चूचों में जबरदस्त दर्द होने लगा था लेकिन वो धक्के पर धक्के लगाते हुए मेरी चूत मारने में लगा हुआ था जैसे उसको कभी दोबारा चूत मिलने वाली ही न हो। उसकी चुदाई में इतना दर्द होने लगा कि पलंग के साथ-साथ मैं भी अंदर तक कराहने लगी। मैंने मन ही मन कहा कि किस गँवार के लिंग के चक्कर में फंस गई।

वो रुक ही नहीं रहा था। मैंने छटपटा कर उसका लिंग योनि से निकलवा दिया लेकिन उसने फिर से मुझे पकड़ कर लिंग को योनि में फंसा दिया और मेरी कमर पर दांतों से काटने लगा और दूधों को ज़ोर से भींचते हुए मेरे ऊपर ही गिरने को हो गया। मेरी टांगें चौड़ी होकर फैल गई थीं और वो मेरे ऊपर लेटकर मेरी चूत में लिंग को पेले ही जा रहा था।

मैं दूसरी बार झड़ गई और चूत पच्च-पच्च की आवाज़ करने लगी। उसने आवाज़ सुनकर दो तीन धक्के इतने ज़ोर से लगाए कि मैं मर ही जाती। उन धक्कों के साथ वो एकदम से रुक गया और लिंग को बाहर निकालते हुए मेरी कमर पर झड़ गया।

मेरी हालत तो वैसे ही खराब हो गई थी। कुछ देर वो बेड पर मेरी बगल में पड़ा रहा। मैं

धीरे से उठी और उसको देखा तो वो मुस्कुरा रहा था जैसे बहुत बड़ा किला जीत लिया हो।
मैंने भी हल्के से मुस्कुरा दिया और उठकर कपड़े पहनने लगी।

उसने पूछा- मज़ा आया मैडम ?

मैंने उसकी बात को अनदेखा करते हुए कहा- कुछ खाओगे क्या ?

उसने कहा- मैं तो गोली खाकर ही आया था.

मैंने मन ही मन कहा 'गँवार कहीं का !'

मैं समझ गई कि ये गोलियों का ही असर था।

मैंने उसके बाद उससे कुछ नहीं पूछा। मैंने टाइम देखा तो शाम के 4 बज गए थे। मैं काफी थक गई थी और अब आराम करना चाहती थी।

मैंने उससे कहा- अच्छा दिनेश मेरे पति अब आने वाले होंगे। तुम्हें निकल जाना चाहिए।

वो उठकर कपड़े पहनते हुए बोला- फिर कब बुलाओगे मैडम ?

मैंने कहा- मैं तुम्हें फोन कर लूंगी।

उसने कहा- ठीक है, बता दियो। मैं रूम पर कभी-कभी ही आता हूँ। दो दिन पहले ही बुकिंग करवा लेना।

मैंने कहा- ठीक है, मैं बता दूंगी। अब तुम जाओ।

वो बोला- आज का खर्चा पानी तो दे दो मैडम..

मैंने पूछा- पैसे ?

वो बोला- हां...

“लेकिन पैसे की तो कोई बात ही नहीं हुई थी हमारे बीच में ?” मैंने कहा।

वो बोला- तो इतनी मेहनत मैंने वैसे ही होती है क्या ? आप भी कमाल करती हो।

कहकर वो हंसने लगा।

मैंने कुछ पल सोचा और पूछा- अच्छा कितने पैसे चाहिएँ तुम्हें...

उसने कहा- 5 हजार..

मैं समझ गई कि इसने मुझे अपनी कमाई के लिए ही मेट्रो में गरम किया था।

मैंने कहा- देखो, अभी पांच तो नहीं हैं मेरे पास लेकिन अभी तीन ही रख लो, बाकी अगली बार आओगे तो ले लेना..

उसने कहा- ठीक है तीन तो दो।

मैंने किसी तरह उस दिन उससे पीछा छुड़ाया और फिर मन ही मन हाथ जोड़ लिए कि फिर इस जैसे के चक्कर में नहीं पड़ूंगी।

उस दिन के बाद कई बार उसके मैसेज आए लेकिन मैंने कोई जवाब नहीं दिया। फिर एक दिन उसका कॉल भी आ गया। मैंने फोन पिक न करके कॉल को रिजेक्ट कर दिया। उसने अगले दिन फिर फोन किया। मैंने सोचा ये पीछे ही पड़ गया है। मैंने उसके नम्बर को ब्लैक लिस्ट में डाल दिया।

उसके बाद मेरे पास हर रोज़ अनजान नम्बरों से फोन आने लगे तो मैंने वो नम्बर ही बंद कर दिया। बड़ी मुश्किल से पीछा छूटा। अच्छा हुआ मैं एक ठोकर में ही संभल गई... लेकिन जो औरतें सिर्फ और सिर्फ सेक्स की प्यासी रहती हैं उनके लिए ऐसे देसी सांड हमेशा डिमांड में रहते हैं। पर वो औरतें ये नहीं जानतीं कि आना तो एक दिन वहीं पर है जहां से वो चली थीं। पति आखिर पति ही होता है चाहे वो कैसा भी हो।

वैसे भी ये जवानी जब ढल जाएगी तो कोई नहीं पूछने वाला, ऐसी औरतें फिर बिकाऊ माल के सहारे ही काम चलाती हैं लेकिन जीवनसाथी का सहारा नहीं मिल पाता क्योंकि तब तक उनके अंदर से इन्सानियत और रिश्तों की अहमियत दोनों ही खत्म हो चुकी होती हैं।

himbajanshu@gmail.com

